4,3. म्रज्ञोशादित्र Parkat. II, 9. म्रांत्रखास्मितारागदेपाभिनित्रेशाः (पद्य) लोशाः Jogas. 2,3. 2. 12. लोशेषु पद्यमु Parb. 98, 15. Ueber die Bed. von लोश bei den Buddhisten s. Burs. Lot. de la b. l. 443. fgg. 788. Nach Med. bedeutet das Wort noch: Zorn und ट्यनसाय (wordly occupation, care, trouble Wils.).

र्त्वे क्लांग्न (wie eben; adj. playend, quälend, belästigend P. 3,2,146. क्लांगमार s. u. मार.

क्तांशापक् (क्तांश + ग्रयक्) adj. Schmerzen —, Leiden verscheuchend P. 3,2,50, क्तांशापकः पत्रः Sch. Daher bei Wils.: m. Sohn.

क्रीशिन् (von क्रिप् oder क्रीश, adj. mit Schmerzen verbunden, Schmerzen —, Leiden verursachend, beschädigend: त्रण Ragu. ed. Calc. 12, 76. नि:श्वासेनाथर त्रिशनयक्रीशिना Megu. 88.

क्राप्टर् (von क्रिय् m. Schmerz-, Leidenbereiter MBB. 3, 1076. क्रीतिकिक n. ein aus der Pflanze क्रीतिक (क्रीतिकिका?) bereitetes berauschendes Getränk Çabdak. (schlechtweg = नद्य) im ÇKDB.

ਜ਼ੈਣਿਧ und ਜੈਣਿਧ (von न्नीत्र) n. 1) männliches Unvermögen TS. 2, 3, 3, 4. Suyn. 1,90,21. 2,134, 5. fgg. 87,12. 398,18. Hr. 1, 129. — 2) unmännliches Benehmen, Schwäche, Zaghaftigkeit, Feigheit: प्रकृतिर्हिस्ता न्नीणां भीतृतं न्नीट्यनेव च R. 3,19,5. न्नीट्यं मा स्म गमः Вилс. 2,3. МВн. 3,1312. 13. 1603. Вилс. Р. 4,23,62. 7,13,33. Uebertr. auf leblose Dinge: प्रतित्पल्लानीट्यमम्नाएयापुः मुरद्विपाम् die Schwäche eines Lotusblattes R. 301. 12.86.

लोान n. = लेगानन् H. ç. 123. AK. 2, 6, 2, 16, Sch.

ल्लामन् m. in der älteren, n. in der späteren Sprache; nach AK. 2,6, 2,16. Тать. 3,3,25 und II. 605 = तिल्लान्ना, welches von Сольвоокь und Wilson durch Urinblase übersetzt wird. Nach ÇKDa. ist ल्लामन् चपुन्एम्न, welches durch Lunge gedeutet wird. Da ल्लामन् auf der rechten, फुट्युन्स auf der linken Seite des Herzens erwähnt wird, kann jenes nur die rechte, dieses die linke Lunge bezeichnen. युन्नञ्च ल्लामानञ्च रहयस्याधस्तादित्तिणोत्तरा मांमात्र्याद्वा । ल्लामान इति नित्यं (!) बङ्गवचनमन्निम्निन्न ÇAÑK. zu BRII. ÅR. Up. 1,1, 1. बाङ्गिर्द्धयार्मच्य वतः । तन्मध्य द्व्यम् तत्याञ्च ल्लाम पिपामास्यानम् VAIDJ. im ÇKDR. AV. 2,33,3. 9,8,12. 10,9,15. VS. 19,85. AIT. BR. 7. 1. ÇAT. BR. 12,9,1,3. 15. ल्लामहरूयम् 4,5,4,6. KATJ. ÇR. 6,7,11. GOBII. 4,1,2. pl. VS. 23,8. ÇAT. BR. 10,6,4,1. — JAŚK. 3,94 (ST.: Galle). Suça. 1,281,1.10. पुष्त्रल्लाममन्निन्नहास्त्रप्टाद्य (संघर:) 1,340,11.21. 329,6 (bloss hier entschiedenes neutr).

क्रीश m. = क्राश Zuru/ः सिधूरिय प्रयुग श्रीश्रुया युता यदि क्राश्मनु वर्षि ку. 6,46,14.

क्षा (von 1. का) adv. P. 5,3,12. 7,2,105. 1) = कास्मिन् (कात्रास्मिन्), loc. von 1. का कात्र): श्रनार्यायां समुत्यत्रो ब्राव्साणातु यहच्छ्या । ब्राव्साणात् प्रत्यक्ष्या क्ष्रियस्य क्षेत्रित चेद्रवेत् ॥ М. 10,66. — 2) wo? wohin? क्षेत्रेदानों सूर्यः काश्चित्रेत ए. 1,35,7. क्षेत्र नृतं काद्वा ऋर्य गतं 38,2.3. 165, 6. 5,30,1. 10,111,8. AV. 10,7,1.4. 15.11,2. क्षेत्र स्तं यूट्यं गतम् ए. 1, 103,4. क्षेत्रय क्षेत्रदेसि 8,1,7. AV. 10,7,5. ÇAT. BR. 14,6,11,1. क्षासि SAV. 6,9. N. 12,73. ÇAR. 32,1. VET. 20,2. क्षासि जुजासि ए. 5,34,21. स नरः सर्वथा न्नेयः कश्चासी क्ष्र च वर्तते N. 17,40. Ducktas. 73,16. क्ष्र यास्यसि N. 6,2. R. 3,7,15. Pankat. 36.21. Hit. 26,8. VET. 24,11. ÇUK. 43,4. In

Verbindung mit हुद्ध (s. oben), म्रहे RV. 10, 51, 2. AV. 20, 129, 6. mit हव 10,8,39. mit स्विद् (s. auch oben): क्वा स्वितात्या पितरी व म्रासत्: RV. 1,161,12. भून्या म्रन्रसंगातमा क्री स्वित् 164,4.17. 168,6. 4,51,6. 10,40, 14. 111,8. AV. 10,2,2. mit नुः क्षान् ते तित्रयाः प्रहाः N. 2,18. 12,73. Milav. 28, 13. वा न् राजनगती औस N. 12, 8. 99. 17, 36. 22, 13. वा न् वस् — श्रमन्तात्तमातमानं किनोदयामि Çix. 32, 11. वा न् खल् संप्रात गच्छानि 41, 17. Am Ans. eines adj. comp.: विज्ञायेता क्राजन्मानी क्रानिवासी तथैव च MBH. 1,7414. — 3) in Verbindung mit ਮ੍ਰ, ਸ਼ੁਜ਼੍ oder गत wie steht es mit ihm oder damit? ब्रोईभूख: स्य ह्रता न म्राजंगन् wo ist der (was ist aus dem geworden), welcher als Bote bei uns erschien? RV. 1,161,4. क्कार् तानि ना सच्या वेभ्वः was ist aus unserer Freundschaft geworden? 7,88,5. AV.10,8,7. का स्विद्राह्मणस्य वचा वन्व wie steht es nun mit der Rede des Br.? Çat.Br. 3, 8, 2, 25. 1, 2, 5, 9. 14, 4, 1, 9. 5, 1, 16. ज्ञाक् भवानि was soll mit mir werden? 1,6,1,6. 6,1,3,2. 14,6,2,13. वा ते स्पूर्यन्मेव: स्पात wie würde es ihnen gehen, wenn eine Wolke käme? 3,2,2,5. प्या यमधानमेव्यत्स्यातं गत्ना स का ततः स्यादेवं तत् ५,1,३,13. ये रात्रा भ्या नतत्रारयस्ते रिवा का भवति P. 3,1,12, Vartt., Sch. इति सत्यं त् प्रति-मृत्य का तहतम् N. 24, 14. का गतस्तव मट्यसाधारणान्रागः Dagak. 66, 8. Auch ohne verbum: मनांस तह्वविदंग तु विवेचके का विषया: का सुवं का पाग्रिक: wie steht es mit ihnen? d. i. was haben die für eine Bedeutung? sie haben nichts zu bedeuten Çixtiç. 2,5. म्णाना बक्किना सक् नैत्रीतंगमः क्त (= न कचित् in keinem Falle, durchaus nicht) Pankat. 210, 21. NAISH. 1, 20. - 4) a - a wo ist dieses? - wo ist jenes? d. i. wie weit ist dieses von jenem entfernt? wie wenig stimmt dieses zu jenem? का वर्ष का परान्तमन्मवा मुगशावैः सनमेधिता जनः Çak. 51. Megu. 5. Bulla. P. 7,9,26. 14,13. Kin. 6,37. का मुर्पप्रभावी वंश: का चाल्पविष-या नित: Ragn. 1,2. Pras. 29,3.6. द्वा च ते तत्रियवलं का च ब्रह्मवलं म-कृत R. 1,36,4. हा वत कृरिणकाना जीवितं चातिलीलं हा च निशितनि-पाताः सार्यङ्काः शरास्ते Çix. 10. क नरुप्यिः स चैवाय्यः साप्सराः क च मेनका। क्क च वमेबं कपणा MBn. 1,3065. क्क च शस्त्रं क्क च रूपां क्क च तात्रं तपः वा च R. 3,13,24. कात्र — वा dass. Buig. P. 7,9,25. — 5, wie viel weniger (vgl. त्रृतस्ः नैतत्स्रगणाः सर्वे नास्रा न च रातसाः। गन्धर्व-यतप्रवराः सर्वितर्मकेरियाः (६०. शक्कवित)॥ का गतिर्मानुषाणाः च धनुषे उत्तय प्रयूर्णो । म्रोरापणे u. s. w. R. 1,67,10. — 6; wann? wie? का स्त्रीना नश्येत् का कीयं नित्येत ÇAT. BR. 12,4,1,11. wie? KATHOP. 1,28, v. l. — र) irgendwo: जापा तंप्यते कितवस्यं कीना माता पुत्रस्य चर्तः के स्वित् RV. 10, 34, 10. - 8) mit म्रिप a) = क्रास्मिन्निप: पुरायती में कृत तेन तपःकार्यात्रङ्काम् Hir. Pr. 17. — b, irgendwo, irgendwohin, an einem bestimmten Orte (den man nicht näher bezeichnen kann oder will) Panкат. 96,5. स चाणक्या दिजः ब्लापि गला कृत्यामसाध्यत् Катийя. 3,121. सो ४ घः — जगाम काप्यतिजवादलह्या लाकलाचनैः VID. 24.136. PANKAT. 1,241. नैव द्वापि (nirgends) प्रपश्यामि नलम् N. 16,5. — c, bisweilen Sin. D. 2, 19. — 9) mit ਚ irgendwo oder jemals: নান্সূর ক্ল चार्नेन Bais. P. 4,29,64. — 10) mit 및 기 nirgends (eine vorangeh. Negation verstärkend): नात: स्वतरं कांग्रिक्षोंके व्याच न रूप्यते MBu. 14,560. — 11) mit चिद्र a) = किस्मिश्चित्ः क्वचित्प्रदेशे Passkar. 118, 14. क्वचिद्धिष्ठाने 262, 5. द्वाचिद्येये H. 84. - b, irgendwo, irgendwohin: विन्देतापि मुखं द्वाचि-त (könnte auch zu c. gezogen werden) N. 10.12. Vet. 6, 17. मह्हामि तपः